वर्ष-9 अंक-6, जून 2018

पटना कलम

बिहार के सांस्कृतिक परिदृश्य का साक्षी

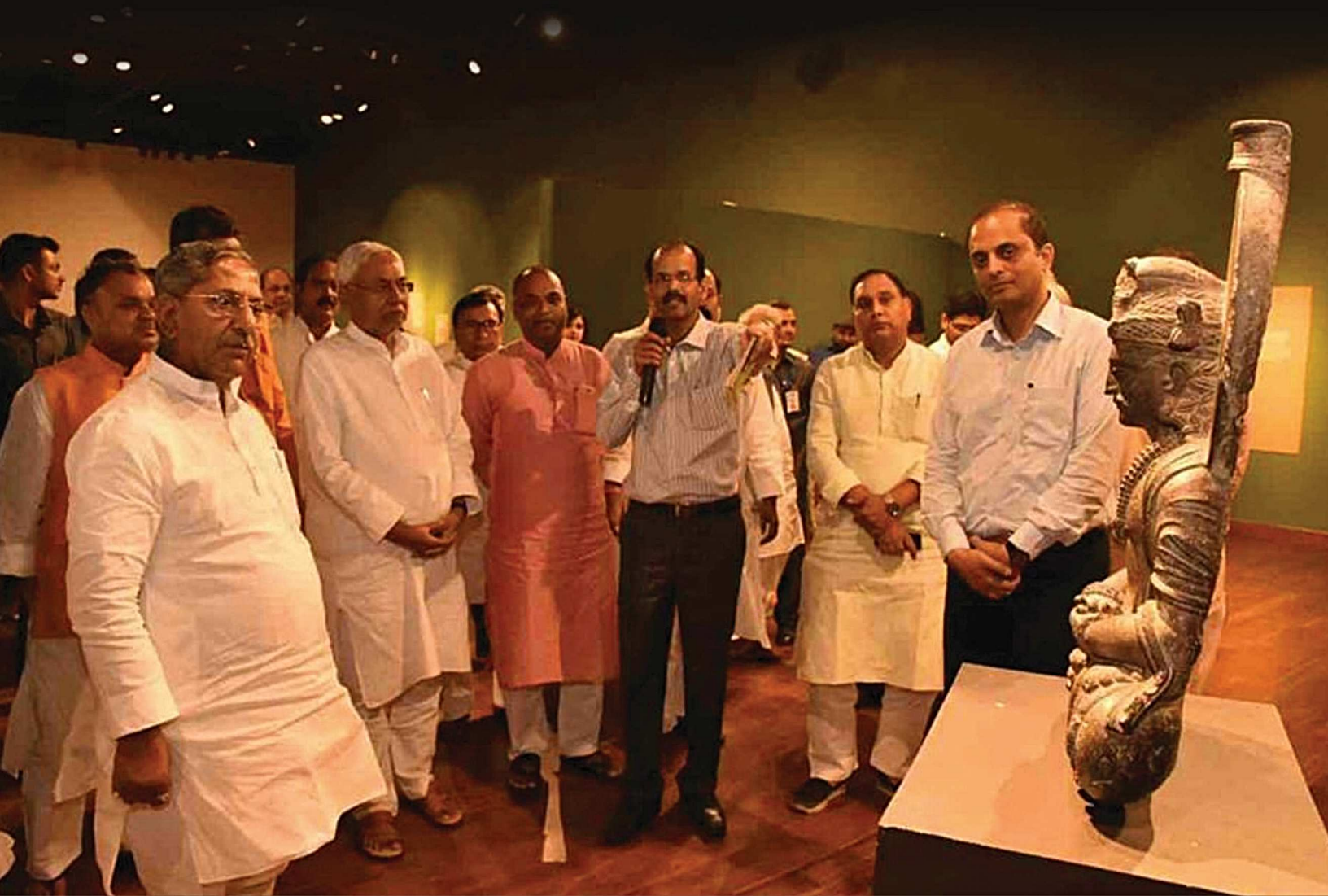

गजेंद्र नारायण सिंहः बिहार का आखिरी संगीत अध्येता

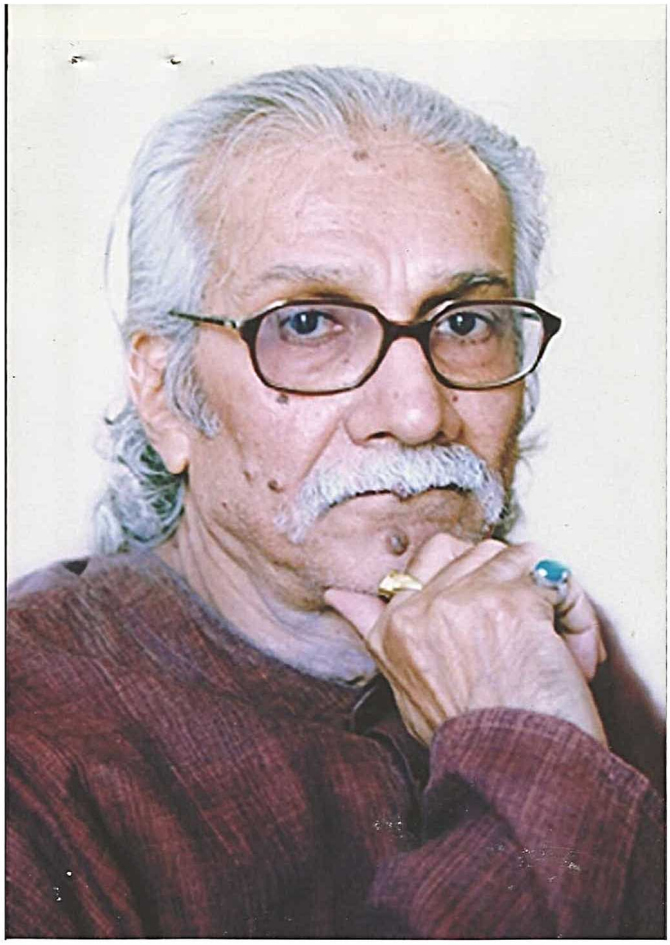

यूं तो पूरा नाम गजेंद्र नारायण सिंह था लेकिन क्या बड़े, क्या छोटे, सब उनको बड़े प्यार-अधिकार से गजेंदर बाबू ही कहते थे। पटने में श्रीकृष्णपुरी में रहते थे। राह चलते भी कोई मिल जाये और संगीत की बात छेड़ भर दे और बात छेड़नेवाला संगीत का अनुरागी हो, रसिया हो, जानकार हो, जिज्ञासु हो तो फिर गजेंदर बाबू की प्राथमिकता में उससे बातचीत करने का काम ही आ जाता था। ऐसा इसलिए कि उनके रग-रग में राग का ही वास था, वे सिर से नख तक संगीत के ही आदमी थे। और संगीत भी कोई एक तरीके का नहीं। बेशक उनकी पहचान बिहार के ध्रुपद परंपरा को सहेजने, बचाये-बनाये रखने में लगे रहनेवाले अध्येता के रूप में है लेकिन संगीत के क्षेत्र में वही इकलौती पहचान नहीं उनकी। बिहार के इतिहास के पन्ने को पलट कर देखें तो 20वीं और 21वीं सदी में कोई उनकी तरह अनवरत, न जाने कितने सालों से, संगीत को ही जीनेवाला कोई हुआ भी नहीं। उनका इस तरह से देश के स्तर पर शास्त्रीय संगीत का इनसाइक्लोपीडिया बन जाना और बिहार के संगीत इतिहास का सबसे गहरा जानकार बन जाना कोई साधारण और सहज बात भी नहीं थी। गजेंदर बाबू पहले तो खुद ही कलाकार बनने की ख्वाहिशों के साथ सीखना शुरू किये लेकिन बाद में धीरे-धीरे नसीर अहमद खां, डागर बंधु, एल के पंडित, नारायण राव व्यास, पंडित राजनारायण, किशोरी अमोनकर, पंडित भीमसेन जोशी, पंडित जसराज, विनायक राव पटवर्धन, गोदई महाराज, गिरिजा देवी, करमतुल्ला खां, निखिल बनर्जी जैसे देश के अलग-अलग हिस्से में रहनेवाले कलाकारों के संपर्क में आते गये और फिर सीखने से ज्यादा लिखनेवाले होते गये। और जब लिखनेवाले बनने लगे तो देश के बिहार के सुदूर इलाके में खाक छानना, देश के चप्पे-चप्पे में जाना, मालविकाग्निमित्र, हर्षचरित, कादंबरी जैसी चर्चित किताबों से लेकर फ्रांसिस बुकानन की रिपोर्ट तक को खंगाल कर संगीत के तत्व को निकालते रहना उनके रोजमर्रा के जीवन का हिस्सा बन गया। गजेंदर बाबू देश भर के बड़े नामवाले कलाकारों की सोहबत और सान्निध्य में रहने के बाद उनसे बहुत कुछ सीखते-समझते जरूर रहे लेकिन जब अध्ययन-अनुभवों को उकेरने की बारी आयी तो वे अपने बिहार के हो गये। देश के इन बड़े नामचीन कलाकारों की बजाय बिहार की संगीत परंपरा, विस्मृति के गर्भ में समा चुके कलाकारों, इतिहास के पन्नों में बेदखल बिहारी कलाकारों और दरभंगा, बेतिया, डुमरांव जैसे घरानों को उभारने, स्थापित-प्रतिष्ठित करने में पूरा जीवन लगा दिये। वे बेतिया घराने के आदि पुरुष चमारी और कंगाली मल्लिक के नायकत्व को उभारने लगे, घनानंद के काल में मशहूर कलाकार और गणिका रही कोशा को इतिहास के पन्नों में जगह दिलवाने की कोशिश में लगे रहे, गया की ढेलाबाई, पटना की जोहराबाई जैसी गायिकाओं के व्यक्तित्व-कृतित्व को उकेरने में लगे रहे, मांगन खवास की कहानियों को सामने लाने में लगे रहे। ध्रुपद, खयाल और ठुमरी गायन में बिहार की विशिष्ट शैली को स्वतंत्र रूप से स्थापित करने में लगे रहे। बिहार में जनमे-पले-बढ़े ऐसे न जाने कितने कलाकारों को उन्होंने बिहारी गौरव का विषय बनाया। बिहार के प्रख्यात कलाकार पंडित रामचतुर मल्लिक उनके बारे में कहते थे कि बिहार में गजेंद्र नारायण सिंह की तरह संगीत की दुनिया में पैठ रखनेवाला और संगीत की समझदारी रखनेवाला दूसरा कोई नहीं है। और उतना बेबाक बोलनेवाला भी कोई नहीं है। उनकी संगीत-मर्मज्ञता के आधार पर 2005 में उन्हें भारत सरकार ने पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया लेकिन गजेंदर बाबू के पास जाने पर वे अपने इस सम्मान का गुणगान नहीं करते थे। वे संगीत पर बात करना पसंद करते थे। कला पर ही बात करना पसंद करते थे। वे संगीत को महज मनोरंजन का माध्यम नहीं मानते थे। वे कहा करते थे कि संगीत ही है जो समाज में साझी परंपरा को बचा सकता है, आपस में फसाद करानेवाले, तनाव बढ़ानेवाले तमाम वादों से मुक्त कर इंसान को इंसान बना सकता है। उनकी दो चर्चित किताब 'महफिल' और ' बिहार में संगीत परंपरा' में इस स्थापना की प्रतिध्वनि भी सुनायी पड़ती है। गजेंदर बाबू की ये दो किताबें ऐसी हैं, जिनकी वजह से वे संगीत की दुनिया में दुनिया भर में जाने गये। उनकी आखिरी दो किताबें और थीं, जिन्हें लेकर वे पिछले दो सालों से बार-बार बच्चों जैसा उत्साह और उमंग से बात करते थे। एक किताब- मुस्लिम शासकों का रागरंग और दूसरी किताब- फनकार शहंशाह औरंगजेब। इन दोनों किताबों को लिखने में वे दस सालों तक शोध अध्ययन करते रहे लेकिन अफसोस कि उनके दुनिया से विदा होने के घंटे भर बाद ये दोनों किताबें उनके घर पहुंची। वे अपनी इन दो महत्वाकांक्षी किताबों को छपित रूप में देख नहीं सके। लेकिन उनकी ये दोनों नयी किताबें और दो पुरानी किताबें, न सिर्फ बिहार के लिए बल्कि भारतीय संगीत जगत को बड़े फलक पर समझने के लिए विश्वसनीय किताबों की श्रेणी में ऊपरी पायदान पर रहेगी।

● निराला बिदेसिया

वर्ष - 9, अंक-6, जून 2018
पटना कलम
बिहार के सांस्कृतिक परिदृश्य का साक्षी

संरक्षक
कृष्ण कुमार ऋषि

प्रधान संपादक
चैतन्य प्रसाद

संपादक
विनोद अनुपम

संपादकीय संपर्क
निदेशक
सांस्कृतिक कार्य निदेशालय
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार
विकास भवन, बेली रोड, पटना
email :culturebihar@gmail.com
vinod.anupam63@gmail.com

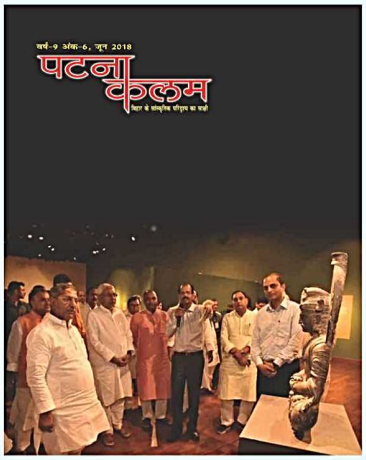

प्रधान सम्पादक की कलम से ...

भारतीय सांस्कृतिक विरासत से प्रभावित होकर सन 1784 में सर विलियम जोन्स ने एशियाटिक सोसायटी की स्थापना की। एशियाटिक सोसायटी बंगाल द्वारा अपने पुस्तकालय के विकास में हस्तपोथियों, मानचित्र, मुद्राएं, आवक्ष आकृतियां, चित्र, उत्कीर्णलेख तथा अन्य सामग्रियां संकलित की गयीं । एशियाटिक सोसायटी के सतत प्रयास से ही सन 1814 ई. में भारतीय संग्रहालय कलकत्ता की स्थापना हुई जिसे भारत का प्रथम संग्रहालय होने का गौरव प्राप्त है। भारतीय संग्रहालय की स्थापना के बाद अनेक संग्रहालयों के स्थापना की प्रक्रिया शुरू हुई, जिसमें पटना संग्रहालय भी शामिल है, जिसकी विधिवत शुरुआत 1915 में हुई। वास्तव में ऐसे समृद्ध अतीत वाले राज्य में संग्रहालय की स्थापना का खास महत्व था ताकि सभ्यता के तेज विकास के बाद भी हमारा स्वर्णिम अतीत जीवंत रहे। संग्रहालय कहने को अतीत को सुरक्षित रखने की जगह मानी जाती है, जबकि यह हमारे विकासक्रम को समझने का अवसर प्रदान करती है। समय के साथ संग्रहालय की जवाबदेही भी बदली है, पहसे जहां यह सिर्फ संग्रह के केन्द्र के रूप में विकसित हुआ था, संग्रहालय की नई अवधारणा संवाद की है, इसे इन्टरैक्टिव बनाने की है। आश्चर्य नहीं कि देश के आधुनिकतम संग्रहालयों में एक बिहार संग्रहालय को उसी अवधारणा के अनुरूप विकसित किया गया है। जहां दर्शक, सिर्फ दर्शक नहीं होते, वे अपने इतिहास के साथ इन्वाल्व होते हैं।

'अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय परिषद' के अनुसार, संग्रहालय में ऐसी अनेक चीजें सुरक्षित रखी जाती हैं, जो मानव सभ्यता की याद दिलाती हैं। संग्रहालयों में रखी गई वस्तुएं प्रकृति और सांस्कृतिक धरोहरों को प्रदर्शित करती हैं। संग्रहालयों के इसी महत्व को स्वीकार करते हुए हुए संयुक्त राष्ट्र ने 1983 में '18 मई' को 'अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय किया। इसका उद्देश्य आम जनता में संग्रहालयों के प्रति जागरुकता फैलाना और उन्हें संग्रहालयों में जाकर अपने इतिहास को जानने के प्रति जागरुक बनाना है। 'अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय परिषद' 1992 से प्रत्येक वर्ष एक विषय का चयन करता है एवं जनसामान्य को संग्रहालय विशेषज्ञों से मिलाने एवं संग्रहालय की चुनौतियों से अवगत कराने के लिए स्रोत सामग्री विकसित करता है।

हमारे माननीय मुख्यमंत्री की संग्राहलयों के विकास के प्रति यह प्रतिबद्धता ही समझी जाएगी कि अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस के पूर्व संध्या के दो दिन पहले उन्होंने अपने पूरे मंत्रिमंडल के साथ बिहार संग्रहालय के परिदर्शन की योजना बनाई। यह शायद देश में एकमात्र दृष्टांत होगा जब किसी राज्य के पूरे मंत्रिमंडल ने एकसाथ संग्रहालयों का परिभ्रमण किया हो। मुख्यमंत्री ने अपने सहयोगियों के साथ संग्रहालयों की बेहतरी की संभावनाओं पर भी बातचीत की। हमारे लिए वाकई गौरव के क्षण थे, जब इस अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक संध्या में महामहिम राज्यपाल ने भी अपनी उपस्थिति से समृद्ध किया। बिहार संग्रहालय के नए खंडों का लोकार्पण भी किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री के द्वारा बिहार संग्रहालय के नवनिर्मित खंडों का लोकार्पण भी किया गया।

संग्रहालय आपको इतिहास से जोड़ते हैं और भविष्य में आगे बढ़ने के लिए आत्मविश्वास देते हैं। किसी भी खास दिवस की सार्थकता उससे सबक सीखने की होती है। अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस की भी यही सार्थकता होगी कि हम अपने अतीत को देखें, समझें और आगे बढने के लिए ऊर्जा ग्रहण करें।

शुभकामनाओं के साथ

चैतन्य प्रसाद

(चैतन्य प्रसाद)
प्रधान सचिव
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार

15 मई से खुल गयी बिहार म्यूजियम की नयी 'डी' गैलरी

विश्व संग्रहालय दिवस 18 मई के तीन दिन पूर्व प्रदेश के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और सरकार के मंत्रियों व वरीय अधिकारियों ने बिहार संग्रहालय का निरीक्षण किया। इस दौरान वे सभी यहां करीब तीन घंटे तक बिहार संग्रहालय का भ्रमण कर विभिन्न दीर्घाओं का अवलोकन किया और संग्रहालय के हर पहलुओं से रूबरू हुये।इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने नये बने 'डी हिस्से' का लोकार्पण किया भी किया। इस भ्रमण के बाद मंत्रियों ने संग्रहालय की खूबसूरती और इसमें इस्तेमाल की गयी तकनीक को अंतर्राष्ट्रीय स्तर का बताया और इसकी तारीफ की। इस अवसर पर कला, संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि, उद्योग मंत्री जय कुमार सिंह, शिक्षा मंत्री कृष्णनंदन प्रसाद वर्मा, पथ निर्माण मंत्री नंदकिशोर यादव, श्रम मंत्री विजय सिन्हा, स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडे सहित कई मंत्रियों ने बिहार संग्रहालय को बेहतरीन उपलब्धि बताया। उन्होंने कहा कि इसे अंदर से देखकर विदेश में किसी दर्शनीय स्थल को घूमने का अहसास होता है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री के मंत्रिमंडलीय सहयोगी, मुख्य सचिव अंजनी कुमार सिंह, प्रधान सचिव कला, संस्कृति एवं युवा विभाग चैतन्य प्रसाद, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव चंचल कुमार, मुख्यमंत्री के सचिव अतीश चन्द्रा, मुख्यमंत्री के सचिव मनीष कुमार वर्मा, सहित अन्य वरीय अधिकारी उपस्थित थे।

इसके बाद कबीर गायन का आयोजन बिहार संग्रहालय के सभागार में हुआ,जिसे राज्यपाल सत्य पाल मलिक ने भी अपनी उपस्थिति से गरिमा प्रदान की। देवास मध्यप्रदेश के कालूराम बामनिया ने चल उड़ जा रे पंछी..., मन लागो यार फकीरी में..., मन मस्त हुआ फिर क्या बोले... आदि कबीर भजन सुनाया जिसकी सभी ने भूरी भूरी प्रशंसा की। बामनिया ने कहा कि संगीत हर दौर में बदलता है लेकिन लोकगीत तो जनमानस का हिस्सा है। उसके श्रवण से मनुष्य के मानस में जो तसल्ली और सुकून निर्मित होता है वह रूहानियत की जमीन रचता है, वह और कहां? समस्त भक्ति कालीन कवि कालजयी हैं लेकिन कबीर की कहन बेजोड़ है। वे हर परिवेश,भूगोल, उम्र, मत,मजहब और रीति-रिवाज मानने वाले के अंतस को छूते हैं। वर्तमान समय में लोक-संगीत के सिरमौर हैं कबीर।

इस उद्घाटन के साथ ही बिहार म्यूजियम 15 मई से और भी आकर्षक हो गया है। ए, बी और सी गैलरी के बाद अब डी गैलरी 15 मई से खुल गयी है। इस गैलरी में ही आज से दीदारगंज से मिली मौर्यकालीन यक्षिणी की मूर्ति जर्मनी से आये सेक्योर ग्लास के बीच स्थापित की गयी है। यही नहीं इस गैलरी में 8 वीं सदी की अद्भुत मूर्तियों की श्रृंखला स्थापित की गयी है। इसमें नालंदा से मिली चंडिका की मूर्ति, बाल कार्तिकेय के साथ पार्वती की मूर्ति और चवर-चक्र के साथ मिली लक्ष्मी की मूर्ति भी शामिल हैं।

बिहार संग्रहालय की विशिष्ट कलाकृतियों को इस दीर्घा में प्रदर्शित किया गया है। ये कलाकृतियां बिहार के 2000 वर्षो के उल्लेखनीय एवं उत्कृष्ट कला और शिल्प कौशल के विकास को दर्शाती है। जिसमें मौर्य कालीन दीदारगंज यक्षी प्रमुख है, जो इस काल में कला की पराकष्ठा को दर्शाता है। इसके साथ ही पांचवीं गैलरी का भी काम यहां किया जा रहा है, जहां पर चीन से आये विशेषज्ञ कलाकार निर्माण कर रहे हैं। यहां मूल रूप से कुर्किहार और तेल्हाड़ा से मिली मूर्तियों का प्रदर्शन किया जायेगा। विदित है कि राज्य सरकार द्वारा बिहार संग्रहालय के निर्माण की दिनांक 26 नवम्बर, 2009 को मंत्रिपरिषद् की बैठक में सैद्धान्तिक स्वीकृति देते हुए,यह प्रावधान किया गया कि यह संग्रहालय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का हो और निर्माण, प्रदर्शन आदि पर अन्तर्राष्ट्रीय मानदंडों का पालन किया जाय। मैकी एंड एसोसिएट्स टोकियो और ओपोलिस मुंबई के द्वारा बिहार संग्रहालय के भवन का डिजाइन तैयार किया गया है। कुल 24,000 वर्ग मीटर में बिहार संग्रहालय का निर्माण किया गया है।

इतिहास दीर्घा ए: पाषाण युग से मौर्य

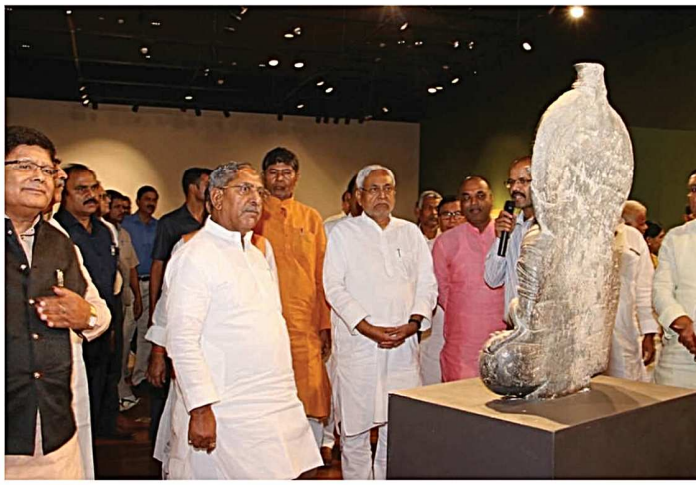

साम्राज्य तक आदि-मानव ने पत्थरों के औजार बनाए और परिवेश के अनुरुप स्वयं को ढाल लिया। मगध साम्राज्य में मौर्य वंश (लगभग 323-185 ईसा पूर्व) के शासन के दौरान ही इस क्षेत्र को राजनैतिक महत्व प्राप्त हुआ और यह भारतीय उपमहाद्वीप के पहले सम्राज्य के केंद्र के रुप में स्थापित हुआ। सम्राट अशोक के (लगभग 268-231 ईसा पूर्व) शासन काल में यह सुशासन का केंद्र बना। इस दीर्घा में यही सब दिखाया गया है।

इतिहास दीर्घा-बी (दूसरी शती ईसा पूर्व से तेरहवी शती ईसवी)शुंग, कुषाण, गुप्त तथा पाल चार महान राजवंशो के काल में मगध फलाख्रफुला एवं समृद्ध हुआ। इन राजवंशों ने मगध में स्थिरता स्थापित की एवं समाज को एक नई सांस्कृतिक उर्जा प्रदान की, जो धार्मिक सहिष्णुता और उदारता से प्रेरित थी। बौद्ध धर्म ने भारत में अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त की। हिंदू धर्म को संहिताबद्ध किया गया, मंदिरों का निर्माण हुआ एवं पुराणों को लिपिबद्ध किया गया। नालंदा, विक्रमशिला और ओदंतपुरी शिक्षण संस्थानों ने दुनिया भर के छात्रों औश्र शिक्षकों को आकर्षित किया, जिसके फलस्वरूप मगध शिक्षा के केन्द्र के रूप में स्थापित हुआ। इस दीर्घा में उपरोक्त कालखण्ड के दौरान समाज में घटित घटनाओं को पुरावशेषों/कलाकृतियों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। जिसमें टेराकोटा, प्रस्तर प्रतिमा, सिक्के एवं धातु प्रतिमाएं हैं।

इतिहास दीर्घा-सी (मध्यकालीन इतिहास) इतिहास दीर्घा सी में बिहार के मध्यकालीन इतिहास में घटित घटनाओं को पुरावशेषों/कलाकृतियों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। यह दीर्घा हमें विभिन्न सत्ताओं के स्थानांतरण से अवगत कराता है, जिसमें शेरशाह शूरी जैसे शासक ने अपने पांच साल के सुशासन को सदृढ़ किया। उन्होंने विभिन्न व्यापार मार्गों को जोड़कर सड़क ऐ आजम बनाया। सूर वंश के पतन के बाद बिहार पर मुगलों का अधिकार हुआ एवं सम्राट अकबर के शासन काल के दौरान बिहार मुगलों के बारह सूबों में एक प्रमुख सूबा बना। इसी काल में सूफीवाद का प्रसार भी बिहार में हुआ। सिख धर्म का भी प्रचार-प्रसार इस काल के दौरान काफी हुआ। इस कालखंड के दौरान समाज में घटित घटनाओं को पुरावशेषों/कलाकृतियों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। जिसमें वीदरी कला, चित्रों, प्रस्तर प्रतिमा, सिक्के एवं धातु प्रतिमाएं है।

विश्व प्रसिद्ध कलाकार सुबोध गुप्ता को आर्ट यहां का खास आकर्षण है। बुद्ध के आंगन में लगायी गयी इनकी कृति को अब आमलोगों के दीदार के लिए लगा दिया गया है। वे इस कला में घरेलू उपयोग की वस्तुएं मसलन फ्रीज, वाशिंग मशीन, बाल्टी, माइक्रोवेव अवन से लेकर सिलाई मशीन तक का उपयोग कर चुके हैं। यंत्रा नामक इस खास आर्ट को बनाने के लिए सुबोध गुप्ता को राज्य सरकार ने आमंत्रित किया था। उन्होंने पिछले साल इसका निर्माण किया था।

इससे पहले मुख्यमंत्री ने अपने मंत्रिमंडल सहयोगियों व वरीय पदाधिकारियों के साथ श्रीकृष्ण साइंस सेंटर परिसर का भ्रमण किया। इस परिसर में भ्रमण के दौरान सभी को 'साइंस ऑन ए स्फियर' में ग्लोब के माध्यम से आकाश गंगा, सौरमंडल, पृथ्वी सहित अन्य ग्रहों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गयी। इसमें पृथ्वी की उत्पत्ति एवं पृथ्वी की उत्पति के पूर्व की परिस्थितियों की जानकारी भी ग्लोब के माध्यम से दी गयी। बिहार संग्रहालय भ्रमण के दौरान मुख्य सचिव अंजनी कुमार सिंह ने इसके निर्माण, विशेषता और यहां लगाये गये विभिन्न दर्शनीय वस्तुओं के संबंध में संक्षिप्त परिचय दिया। इसके पहले मुख्यमंत्री नीतीश कुमार अपने पूरे कैबिनेट मंत्रियों के साथ इसका निरीक्षण कर औपचारिक तौर पर डी गैलरी का आगाज कर दिया।

● **रविशंकर उपाध्याय**

बिहार के इतिहास में एक नया स्वर्णिम पृष्ठ जोड़ेगी
लाली पहाड़ी

कहा जाता है कि बिहार की माटी में विरासत का खजाना है। ऐसा ही क्षेत्र है क्रिमिला। लखीसराय में गंगातट पर बसा क्रिमिला प्राची नकाल में एक प्रमुख प्रशासनिक इकाई थी। विश्वभारती विश्वविद्यालय शांति निकेतन के प्रो. अनिल कुमार की मानें तो जयनगर लाली पहाड़ी पर बौद्धकालीन एवं पालकालीन अवशेष का भंडार है जो 1,200 साल पुराना है। पहाड़ी पर जमींदोज पुरातात्विक अवशेष के रिसर्च से यह बात सामने आई है कि जो संरचना यहां मिली है उसमें पालकालीन किसी किले को दर्शाता है। जिसमें कई भूमिगत कमरे, गुप्त दरवाजे, ग्रेनाइट पत्थरों से बने कमरे के अलावा पौराणिक अवशेष जिले की विरासत की दास्तां सुना रही है। इस जमींदोज पुरातात्विक अवशेषों का खोदाई कार्य शुरू हो गया है। पुरातत्वविद का दावा है कि इसकी खोदाई से संपूर्ण क्रिमिला क्षेत्र का इतिहास नए पन्नों में दर्ज होगा। पहाड़ी की खोदाई कार्य का जिम्मा संभाले प्रो. अनिल कुमार ने कहा कि चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी क्रिमिला क्षेत्र का जिक्र अपनी किताब में किया है। पहाड़ी पर पालकालीन किला का अवशेष पहली बार मिला है जो जिले के इतिहास से कई और पौराणिक आयाम को जोड़ेगा। जयनगर लाली पहाड़ी से लेकर रजौना चौकी (अशोकधाम) एक धार्मिक केंद्र था जिसके कण-कण में बौद्धकालीन व पालकालीन भग्नावशेष आज भी संरक्षण के अभाव में बिखरे हैं।

इसी महत्व को देखते हुए मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार द्वारा लखीसराय जिले के जयनगर स्थित लाल पहाड़ी में चल रहे पुरातात्विक उत्खनन कार्य का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के क्रम में पुरातत्ववेता प्रो. अनिल कुमार ने मुख्यमंत्री को उत्खनन संबंध में विस्तृत जानकारी दी। पहाड़ी के अंतिम छोर तक मुख्यमंत्री ने बारीकी से उत्खनन कार्य का मुआयना किया। मुख्यमंत्री को जानकारी दी गई कि दक्षिण-पूर्व कोने से खुदाई कार्य आरंभ कर उत्तर-पूर्व दोनों कोने तक प्रथम चरण में खुदाई कार्य को संपन्न कर लिया गया है। दक्षिण-पूर्व तथा उत्तर-पूर्व दोनों कोने पर दो दो सुरक्षा मीनार के अवशेष प्राप्त हुए हैं, जो अब तक पूर्वी भारत के सभी उत्खनित बौद्ध मठों से अलग हैं। इस स्थल की पहचान एक बौद्ध भिक्षुणी मठ के रूप में 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में प्राप्त सिंहनाद अवलोकितेश्वर की मूर्ति पर उद्धृत अभिलेख से की गई है। वर्तमान में यह मूर्ति सैंड पीट्सवर्ग संग्रहालय में है। इसका कालखंड 11वीं से 12वीं शताब्दी के बीच का हो सकता है। इन स्थलों से काफी संख्या में मिट्टी के दीप एवं अन्य सामग्री भी प्राप्त हुए हैं। विश्व भारती विश्वविद्यालय शांति निकेतन कोलकाता के पुरातत्व विभाग के प्रो अनिल कुमार ने बताया कि भगवान बुद्ध ने अपने साधना काल में कुल 24 वर्षावास किया। इसमें उन्होंने तीन वर्षावास जिले के विभिन्न क्षेत्रों में किया। घोसीकुंडी, उरैन एवं लाली पहाड़ी पर उसके अवशेष हैं। प्रो कुमार ने प्रदर्शनी के माध्यम से मुख्यमंत्री को उरैन में मिले भांड़, ग्रामीण क्षेत्रों में यत्र-तत्र पड़े मूर्तियां एवं अन्य पुरातात्विक अवशेषों से अवगत कराया। प्रो कुमार ने बताया कि खुदाई में बौद्धकालीन इतिहास के काफी महत्वपूर्ण अवशेष मिलने की संभावना है।

मुख्यमंत्री को यह भी बताया गया कि निकास द्वार के पास से बड़ी मात्रा में काले पत्थर की टूटी मूर्तियों के अवशेष प्राप्त हुए हैं। उत्तर पूर्वी कोने पर एक तीन फीट के मगरमच्छ की आकृति के काले पत्थर का मकर प्रणाल जो मठ की जलनिकासी का मार्ग रहा होगा, खुदाई के क्रम में निकाला गया है। मुख्यमंत्री को जानकारी दी गई कि दूसरे चरण की खुदाई में दक्षिण पूर्वी कोने से दक्षिण-पश्चिम कोने तक खुदाई में पुनः एक पूजा स्थल उत्खनित किया गया है। पूरे उत्खनन वाले क्षेत्र से बड़ी संख्या में लोहे के कील, कौड़ी, बीड, सिल, सिलिंग प्राप्त हुए हैं। इनमें भगवान बुद्ध की भूमि स्पर्श मुद्रा तथा वोटिव स्तूप अलंकृत सिलिंग महत्वपूर्ण हैं। इसके अतिरिक्त बड़ी संख्या में मिट्टी के बर्तन के टुकड़े, खुदाई के हरेक चरण में प्राप्त हुए हैं। इस पुरातात्विक उत्खनन का पूरा क्षेत्र 7109.93 वर्गमीटर है। मुख्यमंत्री ने वहां की खुदाई से प्राप्त अष्टभुजा दुर्गा देवी एवं छह भुजा वैष्णवी देवी की मूर्तियों के संबंध में भी जानकारी ली।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने "एक्सेवेशन साइट एट लाली पहाडी लखीसराय" पुस्तक का भी विमोचन किया। इस अवसर पर जल संसाधन मंत्री श्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह, श्रम संसाधन मंत्री श्री विजय कुमार सिन्हा, कला, संस्कृति एवं युवा विभाग के प्रधान सचिव श्री चैतन्य प्रसाद, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री चंचल कुमार, मुख्यमंत्री के सचिव श्री अतीश चंद्रा, मुंगेर प्रमंडल के पुलिस महानिरीक्षक श्री सुशील खोपड़े, लखीसराय के जिलाधिकारी, पुलिस अधीक्षक, बिहार विरासत विकास समिति के निदेशक प्रो. विजय कुमार चौधरी, अन्य पुरातत्ववेता, शोधार्थीगण, अन्य अधिकारी एवं गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।

राजभवन की कलादीर्घा में दिखा बिहार

राज भवन के राजेन्द्र मंडप में बिहार के सांस्कृतिक विरासत पर आधारित चित्र एवं छाया चित्र प्रदर्शनी का विधिवत उद्घाटन दीप प्रज्वलित कर महामहिम राज्यपाल श्री सत्यपाल मलिक द्वारा किया गया।

उल्लेखनीय है कि यहाँ प्रदर्शित सभी कलाकृतियों का सृजन कला संस्कृति विभाग द्वारा आयोजित बिहार संग्रहालय में दिनांक 06 से 13 मई तक देश के 22 महत्वपूर्ण कलाकारों की एक कार्यशाला में किया गया था।बिहार के सांस्कृतिक गौरव एवं विरासत से लबरेज इन 44 कलाकृतियों के साथ 33 छायाचित्र प्रदर्शित थे,जिसमें वरिष्ठ चित्रकार नरेंद्र पाल सिंह के चित्रकृति 'द बस ऑफ होप' एवं 'टाईम लेस टमटम' में यहाँ के जन जीवन कि कथा व्यथा को बखूबी दर्शाया गया है। श्रीमती विम्मी इंदिरा(दिल्ली) के चित्र फलक पर सृजित (गोल्डन एरा-1 एवं 2) में चाणक्य एवं खुदीराम बोस जैसे बिहार के महापुरुषों को सौम्यता के साथ दर्शाया गया है, जबकि चित्रकार राजेश श्रीवास्तव के चित्रफलक पर राष्ट्रकवि रामधारीसिंह दिनकर एवं लोकनायक जयप्रकाश नारायण जैसे महापुरुषों को। अजय नारायण ने 'यू-स्पेस-1 एवं 2' में पूरे ब्रह्मांड में अपने को तलाशते दर्शाया गया है। त्रिभुवन कुमार देव के ने 'जर्नी' में बिहार के पर्यटन थाती को तथा 'जयमंगला गढ़' को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने की लालसा को रूपायित किया है। रबिन्द्र दास के कैनवास पर जो चित्र सृजित हुए हैं उसके शीर्षक हैं 'प्यार बाँटते चलो' एवं 'प्यार ही प्यार' इस कलाकृतियों में रबिन्द्र ने यहाँ के पर्यटन स्थलों कि साईकिल से परिक्रमा करते प्रेमी युगल को दर्शाया है। भुनेश्वर भास्कर ने अपने चित्रकृति जिसका शीर्षक 'इन टच विद द ट्रेडिशन' में बिहार से जीविका के लिए अन्य शहरों में पलायन कर चुके लोगों के दंश को रूपायित किया है। सुश्री शिखा सिन्हा की कलाकृतियों (द सर्च विदिन एवं सिक्स इन टू फोर)के माध्यम से यहां के ऐतिहासिक धरोहरों के प्रति आकर्षण पैदा करने का प्रयास किया है। राजेश चंद के चित्र श्गोल्डेन वर्ड श में यहाँ के महापुरुषों को तथा 'ब्यूटि ऑफ माई लैंड' में यहाँ के ऐतिहासिक स्मारकों को रूपायित किया है। भोपाल से आए धर्मेन्द्र कुमार के चित्रकृति में 'चंपारण सत्याग्रह' तथा 'बुद्धा' प्रभावी दिखता है।ए0 के0 डगलस यहाँ के मूल निवासी तथा विदेश में रहकर कलासृजन करते हैं। इनके चित्रफलक पर 'इट इज जस्ट विगनिंग -1एवं2' कलाकृतियों में आकृतियाँ गौण हो गयी हैं तथा रंग लय में प्रस्फुटित हुए हैं। मनोज कुमार 'बच्चन' ने पहले चित्रफलक पर 'नीलहे किसानों के मसीहा' के रूप में महात्मा गाँधी को दर्शाया है तथा दूसरे कलाकृति में बाबू कुंवर सिंह की शवीह (पटना कलम शैली से ली गयी) को डाकटिकट के रूप में रूपायित किया है। चित्रकार मिलन दास के चित्रफलक 'गौरव-1 एवं 2 में बिहार के महापुरूषों की छवियाँ दृष्टिगत हैं। वहीं अनिल बिहारी के चित्रकृति 'स्वयंवर' में राम-सीता तथा 'बुद्ध विद मोंक' में बुद्ध को अपने अनुयायियों के साथ दर्शाया गया है। चित्रकार अशोक तिवारी ने चारकोल माध्यम में 'आत्म दीपो भव:' श्वेत-श्याम रंगों में दर्शाया है।

जम्मू कश्मीर के चित्रकार के. के. गाँधी की कलाकृति 'शैडो ऑफ बुद्धा' में बोधगया मंदिर का सुंदर चित्रण किया गया है। दिल्ली के चित्रकार अनुप चाँद के चित्रकृति 'मोक्ष की ओर' भगवान बुद्ध तथा दूसरी कलाकृति 'सत्याग्रह' में गाँधी जी को चंपारण के लोगों के साथ बैठक करते हुए दर्शाया गया है। दिल्ली के नवल किशोर की कलाकृति 'डिवाइन बुद्धा' तथा 'होली गंगा' प्रेक्षकों को पसंद आएगी। भोपाल से पधारी मनीषा जैन गोहिल की कलाकृति 'इनलाइटमेन्ट' तथा 'स्प्रिचुअल जर्नी' बुद्ध के जीवन पर आधारित कलाकृति है। भोपाल की कुसुमलता शर्मा ने अपनी कलाकृति में 'यक्षिणी' के साथ पाटलिपुत्र नगर को दर्शाया है तथा दूसरी कृति में बिहार के ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों का बखुबी चित्रण किया है। चित्रकार सोनल गुप्ता सिंह की कलाकृति 'लाइटमेन्ट' तथा 'मेडिटेशन' भगवान बुद्ध को केंद्र में रख कर रची गयी कलाकृति है। उड़ीशा ललित कला एकेडमी के सचिव तथा चित्रकार मानस जेना कि कलाकृति 'शीर्षकहीन' में सम्राट अशोक को रूपायित किया गया है। इसी के साथ वरिष्ठ छायाकार बी. के. जैन जी के 33 बड़े आकार के छायाचित्र भी इस प्रदर्शनी की शोभा बढ़ा रहे थे । ये छाया चित्र बिहार के पर्यटन स्थल यहाँ के त्योहार, मेले एवं ऐतिहासिक स्मारकों को प्रतिविम्बित कर रहे थे।

इस प्रदर्शनी का अवलोकन करने के उपरांत महामहिम राज्यपाल महोदय ने कहा कि राजभवन में संगीत, कला एवं संस्कृति को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रम आगे भी आयोजित किये जाते रहेंगे। इस अवसर पर महामहिम राज्यपाल के प्रधान सचिव विवेक सिंह, कला संस्कृति विभाग के सचिव आनंद कुमार के साथ राज्य के तमाम गणमान्य कलाकार उपस्थित थे।

• मनोज कुमार 'बच्चन'

उदयनाचार्य की स्मृति में

विश्व विख्यात महान दार्शनिक उदयनाचार्य की पुण्यतिथि पर आयोजित उदयन मेला में आयोजित कार्यक्रम में राज्य के कला एवं संस्कृति मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि ने भाग लिया। इस दौरान उन्होंने आचार्य उदयन की धरती को नमन करते हुए उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उनके प्रति श्रद्धा निवेदित की।

स्थानीय मुखिया बुधन पासवान द्वारा कला एवं संस्कृति मंत्री का स्वागत पाग, चादर के साथ माल्यार्पण कर किया गया। संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि 'उदयन पर्व महोत्सव' को राजकीय दर्जा प्रदान किया जाएगा। उन्होंने कहा जिस तरह सभ्यता संस्कृति समाज से मिलती है उसी तरह हम मिथिला को आगे बढ़ाएंगे तो देश आगे बढ़ेगा। उन्होंने कहा आचार्य उदयन की जन्मस्थली के विकास-विस्तार के लिए डीएम से रिपोर्ट मांगी गई है। रिपोर्ट मिलने के बाद इसे पर्यटक स्थल का दर्जा मिलने की उम्मीद की जा सकती है। पर्यटन विभाग से भी वे करियन को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने की मांग वे करेंगे। कार्यक्रम में विधान पार्षद डा. संजय पासवान, सुमन महासेठ, विधायक संजय सरावगी आदि ने भी भाग लेते हुए आयोजन समिति की जमकर सराहना की। कार्यक्रम में विधायक संजय सरावगी ने कहा कि रामनवमी के तरह सीता नवमी भी देश के गांव-गांव में मनाया जाय तथा उस दिन राष्ट्रीय छुट्टी लागू किया जाय। डा. संजय पासवान ने भी जानकी नवमी मनाए जाने पर बल दियाविधान पार्षद डॉ.संजय पासवान ने संबोधित करते हुए कहा कि उदयनाचार्य की इस धरती के विकास के लिए सामाजिक ट्रस्ट के पीछे सरकार रहेगी, तभी यहां का विकास हो पाएगा। अध्यक्षता डॉ दिनेश कांत ठाकुर ने की। संचालन आचार्य वैद्यनाथ झा बैजू ने किया।

इसके पूर्व कला संस्कृति व युवा विभाग के मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि ने सर्किट हाउस में वार्ता के दौरान कहा कि राज्य के प्रतिभाशाली खिलाड़ी यहीं से खेलेंगे। समस्तीपुर के क्रिकेटर अनुकूल चंद व उनके कोच को राज्य स्तर पर सम्मानित करने की बात कहते हुए उन्होंने कहा कि अनुकूल को झारखंड से खेलना पड़ा, मगर हमारे प्रतिभावान

खिलाड़ियों के साथ ऐसा नहीं होगा। ग्रामीण प्रतिभाओं को उभारने के लिए राज्य के सभी प्रखंडों में स्टेडियम बनाए जा रहे हैं। यहां भी 13 प्रखंडों में स्टेडियम बना है। वहीं 3 प्रखंड में टेंडर की प्रक्रिया जारी है। उन्होंने बताया कि मधुबनी में 350 करोड़ की लागत से पेंटिंग कॉलेज बनेगा। वहीं राजगीर में 633 करोड़ की लागत से अंतर्राष्ट्रीय स्टेडियम का निर्माण किया जा रहा है, जो 2020 तक पूरा होने की उम्मीद है।

संगीत बिहान का हुआ शुभारंभ

कला-संस्कृति व युवा विभाग और बिहार संगीत नाटक अकादमी की ओर से लगभग 15 महीने के बाद पटना के राजधानी वाटिका में संगीत की महफिल सजी। पहले महीने में दूसरे और चौथे शनिवार को संगीत विहान में देश के ख्यातिप्राप्त संगीतकारों को सुनने का मौका मिलता था। अब यह आयोजन महीने में एक रविवार को होगा। सुबह 6 बजे शुरु होने वाले इस आयोजन में इस बार मोतिहारी के विवेक कुमार शिरोमणि ने शिरकत की। उन्होंने गायिकी से समां बांध दिया। हारमोनियम पर पं. मार्कण्डेय मिश्रा, तानपुरा पर दीक्षा मिश्रा और तबले पर अनुराग ने संगति की। इसके पूर्व कला संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि ने कलाकारों को पुष्प-गुच्छ प्रदान कर स्वागत किया। इस आयोजन में बड़ी संख्या में मार्निंग वाकरों ने शास्त्रिय संगीत का आनंद उठाया।

कला-संस्कृति एवं युवा विभाग और भारतीय नृत्य कला मंदिर की ओर से विशेष शुक्रगुलजार कार्यक्रम में गायिका रीता देव ने बनारस और ग्वालियर घराने की गायन शैली से जीता दर्शकों का दिल जीता। दिल्ली की वरिष्ठ शास्त्रीय गायिका एवं पद्मविभूषण गिरजा देवी की शिष्या रीता देव ने बनारस और ग्वालियर घराने की शैलियों के जरिए ठुमरी और दादरा को पेश कर कार्यक्रम में चार-चांद लगा दिया। संगत कलाकारों में तानपुरा पर सुरभि कुमारी, हारमोनियम पर सुधीर कुमार, तबले पर डॉ. श्याम मोहन आदि संगत कलाकारों की प्रस्तुति समारोह को यादगार बना दिया।

शुक्र गुलजार कार्यक्रम में कथक नर्तक अमित कुमार ने अपनी प्रस्तुति से दर्शकों को मुग्ध कर दिया। उन्होंने तीन ताल में उपज, घाट, उठान, आमद, मध्यलय और द्रुतलय, तोड़े-टुकड़े, सादा परण, तिहाईयां लरी का सौंदर्य दर्शाया। घूंघट की विभिन्न मुद्राओं और हाथी का चाल पेश कर दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया। तबले पर बख्शी विकास, हारमोनियम पर रौशन कुमार और सरोद पर मयुख गंगोपाध्याय ने बखूबी संगत की। वैशाली की लोकगायिका सरस्वती मिश्रा ने अपनी गायिकी से सुनने आए लोकगीत प्रेमियों को अपना मुरीद बना लिया। जेहि कोख बेटा जन्मे, वही कोख बेटिया..., लोकगीत से दर्शाया कि बेटियों को भी सम्मान मिलना चाहिए।

शनिबहार के अंतर्गत भोजपुरी गायिका काजोल कुमारी ने कार्यक्रम की शुरुआत देवी गीत से की। अपनी प्रस्तुति में उन्होंने कई भोजपुरी गीत, झूमर, पूर्वी गाकर दर्शकों का मन जीत लिया। हारमोनियम पर विनोद पंडित, बैंजो पर विद्या सागर, इफेक्ट पर अनिल कुमार और नाल पर गुड्डू राज ने संगत किया। बांसुरीवादक मो. सलीम ने अपनी पेशकश में सबसे पहले क्लासिकल गाने राग देश से शुरू किया।

नेहा कुमारी

कूची ने भरे रंग तो कहानी बन गयी

जिस तरह कला की कोई सीमा नहीं होती है, वैसे ही कलाकारों की सोच का कोई बंधन नहीं होता है। कलाकारों के लिए कोई ऐसा विषय नहीं होता है, जिस पर वह अपनी कल्पना, सोच के आधार पर पेंटिंग नहीं बना सके। कला संस्कृति विभाग के आयोजन कला मंगल के अंतर्गत बहुद्देशीय सांस्कृतिक परिसर स्थित बिहार ललित कला अकादमी के कला दीर्घा में समकालीन कला के सात ऐसे ही वरिष्ठ कलाकारों की समूह प्रदर्शनी का आरंभ हुआ, जिसका उद्घाटन कला, संस्कृति व युवा विभाग के मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि ने किया। इस मौके पर विभाग के अपर सचिव आनंद कुमार, सचिव मीना कुमारी, सहायक सचिव संजय कुमार सिंह, बिहार ललित कला अकादमी के पूर्व अध्यक्ष आनंदी प्रसाद बादल, श्याम शर्मा, विनोद अनुपम, शंकर प्रसाद, वीरेंद्र कुमार सिंह, राजकुमार लाल के अलावा कई वरिष्ठ कलाकार व समीक्षक उपस्थित थे। प्रदर्शनी में सात कलाकारों की 46 कलाकृतियों व मूर्तिकला की सात कलाकृतियों को प्रदर्शित किया गया था।

प्रदर्शनी में संजय रॉय की पेंटिंग्स में नारी का स्वाभिमान को खूबसूरती से उकेरा गया है। अपने कृतियों में संजय ने चारकोल का बेहतरीन उपयोग करते हुए नारी स्वाभिमान के विविध आयामों को करीने से उकेरा है। संजय ने अपने चित्रों में भ्रूण, नारी सौंदर्य, जीवन की शांति जैसे विषयों को अपनी दस पेंटिंग्स में खूबसूरती से चित्रित किया है।

81 साल के सुरेंद्र लाल दास कलादर्शी की पेंटिंग्स अपने आप में अद्भूत है। उम्र के इस पड़ाव पर सुरेंद्र लाल दास की बनायी हुई हर पेंटिंग में एक नयी चीज शामिल है। दरअसल सुरेंद्र ने अपनी पेंटिंग्स को श्रीमद्भागवत गीता के श्लोकों पर आधारित कर के बनाया है। प्रदर्शनी में सुरेंद्र लाल दास की छह पेंटिंग्स को शामिल किया गया है।

शराब के नशे में जो भी डूबा वह एक ऐसे मकड़े के जाल में फंस जाता है, जिसका इस जाल से निकलना मुश्किल हो जाता है। प्रदर्शनी में लगी बेबी अर्चना की पेंटिंग्स में यह संदेश बखूबी देखने को मिल सकता है। इसके अलावा एक और पेंटिंग में भगवान बुद्ध को बखूबी चित्रित करती हुई पेंटिंग यह संदेश देती है कि आज के दौर में कहीं भी शांति नहीं है। अगर इंसान को इस दौर में शांति चाहिए तो बुद्ध के संदेश से बेहतर शायद कुछ भी नहीं है। इनकी एक पेंटिंग में कलर नाइफ के सहयोग से श्रमशक्ति तथा चारकोल पर यशोदा कृष्ण के निश्छल प्रेम को चित्रित किया गया है। बेबी की अनूठी पेंटिंग्स में एक ऐसी भी पेंटिंग है जिसे कॉफी के घोल से बनाया गया है।

पेशे से इंजीनियर गोपाल कृष्ण के पेंटिंग्स में नेचर, लोक नृत्य व जीवन के अन्य रंगों को देखा जा सकता है। एक्रेलिक व ऑयल पेंटिंग दोनों माध्यमों से बनायी गयी इन पेंटिंग्स में एक में जहां मणिपुर के लोक नृत्य को उकेरा गया है वहीं बिहार के प्रसिद्ध जट-जटिन नृत्य को भी गोपाल ने अपनी कूची से चटकदार रंगों में बयान किया है। गोपाल के अन्य और चित्र में मनुष्य के जीवन के चार अनिवार्य सच अर्थ, काम, धर्म और मोक्ष को अलग-अलग तरह से पारिभाषित किया गया है।

हर किसी के जीवन में एक लक्ष्य होता है। लक्ष्य तो अलग होते हैं, लेकिन इनके रास्ते मिले हुए होते हैं। इन रास्तों पर ही लगातार मेहनत कर के चलने के बाद लक्ष्य की प्राप्ति होती है। स्कल्पचर आर्टिस्ट रामू कुमार ने फाइबर से बने अपने सात कलाकृतियों में लक्ष्य प्राप्ति करने के सफर को आकारों में ढ़ालने की कोशिश की है।

एक्रेलिक की मदद से दिनेश कुमार की पेंटिंग्स में विविध विषयों को देखा जा सकता है। अपनी एक पेंटिंग में दिनेश कुमार ने घोड़े के ऊपर औरत को सवारी करते हुए उकेरा है। जिसमें यह संदेश निहित है कि औरतें आज के दौर में स्वाभिमानी व स्वावलंबी हो चुकी हैं।

प्रदर्शनी में शीला कुमारी सिंह द्वारा एक्रेलिक की मदद से बनायी हुई पेंटिंग्स कई संदेशों को अपने में समाहित किये हुए है। इनकी प्रस्तुति में तीन आध्यात्म पर आधारित है वहीं एक पेंटिंग करवाचौथ पर आधारित है। जिसमें पति के लिए पत्नी के त्याग को बखूबी चित्रित किया गया है।

● सुजीत श्रीवास्तव

आर्मी सिग्नल ने जीता बास्केटबाल टूर्नामेंट

द्वितीय ऑल इंडिया कृष्ण मोहन प्रसाद मेमोरियल बास्केटबॉल टूर्नामेंट मोइनुल हक स्टेडियम के बाहरी परिसर में साई कोर्ट पर प्रारंभ हुए। जिसका उद्घाटन उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी, कला संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि ने ग्राउंड में खिलाडियों के साथ खेल कर किया। उपमुख्यमंत्री ने पहली ही कोशिश में बाल को बास्केट में डाल कर सबों को चकित कर दिया। बास्केटबॉल एसोसिएशन ऑफ बिहार से मान्यता प्राप्त इस टूर्नामेंट में भाग ले रही आठ टीम को दो पूल में विभक्त किया गया है। पूल ए में झारखंड, चितरंजन, कोलकाता मेट्रो और यूपी जबकि पूल बी में आर्मी सिग्नल, छत्तीसगढ़ पूर्व मध्य रेलवे हाजीपुर और बिहार शामिल है। लीग कम नॉक आउट पद्धति में आयोजित इस टूर्नामेंट में पहले दिन छत्तीसगढ़ ने आर्मी सिग्नल को 76-71 से हराया। आर्मी सिग्नल से सर्वाधिक 33 अंक विशाल ने और संजीव कुमार ने 32 अंक बनाए। इसके बाद उसने बिहार को 68-55 से हराया। बिहार के खिलाड़ियों ने अच्छा खेला, लेकिन बास्केट करने में नाकाम रहे। छत्तीसगढ़ से संजीव ने 31 और दिनेश ने 16 अंक बनाए, जबकि बिहार से मानवेंद्र ने 19 एवं अमरदीप ने 8 अंक जुटाए। अन्य मैचों में सीएल डब्ल्यू ने कोलकाता मेट्रो को 57-48 से, यूपी ने झारखंड को 35-17 से, कोलकाता मेट्रो ने यूपी को 66-49 से हराया। इस अवसर पर पर मेयर सीता साहू, वार्ड पार्षद प्रमिला वर्मा, बिहार प्लेयर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष मृत्युंजय तिवारी के साथ बडी संख्या में खिलाडी और दर्शक मौजूद थे।

यूथ फोरम की ओर से आयोजित इस ऑल इंडिया टूर्नामेंट का फाइनल मुकाबला दुधिया रोशनी में रोमांचक माहौल में हुआ। एक-एक बास्केट पर दर्शकों ने खिलाड़ियों की हौसला अफजाई की। द्वितीय ऑल इंडिया कृष्ण मोहन प्रसाद मेमोरियल बास्केटबॉल टूर्नामेंट का खिताब आर्मी सिग्नल ने कोलकाता मेट्रो को 65-48 से पराजित कर जीत लिया। मैच के पहले क्वार्टर में आर्मी सिग्नल के प्रबोध, सतीन्द्र ने जोरदार खेल दिखाते हुए अपनी टीम को एक समय 5-0 से आगे कर दिया, लेकिन कोलकाता मेट्रो के खिलाड़ियों ने कमबैक करते हुए स्कोर को 5-5 से बराबर कर दिया। इसके बावजूद पहला क्वार्टर आर्मी सिग्नल ने 19-9 से जीत लिया। दूसरे क्वार्टर में कोलकाता मेट्रो ने लंबे खिलाड़ी लोकेश, सुरजीत व श्याम ने मिलकर टेक्निकल खेल दिखाते हुए आर्मी को परेशान कर दिया। आर्मी के विशाल और चौहान ने अच्छा संघर्ष किया, लेकिन मेट्रो ने यह क्वार्टर 13-12 से जीत लिया। तीसरे क्वार्टर में मेट्रो के लोकेश, सरजीत, श्याम, गोपाल और खत्री ने और आर्मी के सतीन्द्र , दिलीप, विशाल, चौहान, प्रबोध ने शानदार खेल दिखाया। इस क्वार्टर में दोनों टीम 10-10 से बराबर पर रही। तीन क्वार्टर के बाद आर्मी की टीम 41-32 से आगे थी। चौथा क्वार्टर में आर्मी 8-0 से आगे होने के बाद धीमा खेलने लगी। मेट्रो के खिलाड़ियों ने इसका लाभ उठाते हुए 9-8 की बढ़त ले ली। इसके बाद आर्मी आक्रामक हुई। यह निर्णायक क्वार्टर 24-16 से आर्मी सिग्नल से जीत ली। इस तरह से फाइनल मुकाबला आर्मी ने 65-48 से जीता। आर्मी के सत्येन्द्र ने 19 और चौहान ने 13 अंक और मेट्रो से प्रसुन्न ने 16 एवं श्याम ने 11 अंक बनाए। सेमीफाइनल में कोलकाता मेट्रो ने छत्तीसगढ़ को और दूसरे सेमीफाइनल में आर्मी सिग्नल ने सीएलडब्लू चितरंजन को हराया। मैच समाप्ति के बाद विजेता एवं उपविजेता टीम के खिलाड़ियों को पर्यटन मंत्री प्रमोद कुमार ने पुरस्कृत किया। मौके पर आयोजन सचिव सुनील प्रसाद, विधायक अरुण कुमार सिन्हा, आईएएस आशीष वर्मा, बास्केटबॉल एसोसिएशन ऑफ बिहार के सचिव सुशील कुमार मौजूद थे।

विस्फी में क्रिकेट टूर्नामेंट

बिहार के खिलाड़ियों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने के लिए सरकार कृतसंकल्पित है। संसाधन के अभाव में यहां के खिलाड़ियों की पहचान राष्ट्रीय स्तर पर नहीं हो पा रही है। इस कमी को बहुत जल्द ही दूर कर लिया जाएगा। यह बातें बिहार सरकार के कला संस्कृति व खेल मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि ने खंगरैठा उच्च विद्यालय के प्रांगण में विद्यापति काली दास लीग क्रिकेट ट्रॉफी 2018 के फाइनल मैच के अवसर पर कही। उन्होंने कहा कि प्रत्येक जिला में एक तीन मंजिला खेल भवन का निर्माण किया जाएगा। जहां खिलाड़ियों को सभी तरह के खेल का प्रशिक्षण दिया जाएगा। साथ ही प्रत्येक प्रखंड में भी एक स्टेडियम का निर्माण किया जाएगा। जहां बीडीओ की अध्यक्षता में एक सात सदस्यीय कमेटी बनेगी। एसडीओ इस समिति के संरक्षक होंगे। इसी तरह जिला में समिति गठित की जाएगी। सरकार चाहती है कि प्रत्येक पंचायत में हर तरह के खेल का आयोजन हो। जिससे की प्रतिभावान युवकों को आगे बढ़ने का अवसर मिल सके, ताकि बिहार खेल में विश्वस्तर पर अपनी पहचान बना सकें।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विधान पार्षद सुमन कुमार महासेठ ने कहा कि यह विद्यापति की धरती है, यहां प्रतिभाओं की कमी नहीं है।

जरूरत है कि सरकार इन प्रतिभावानों को आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करें। उन्होंने यहां स्टेडियम का निर्माण अविलंब कराने की बात मंत्री से कही।

पूरे राज्य में सक्रिय रहा रंगमंच

भारत में सबसे अधिक नाटकों के प्रदर्शन होनेवाले शहरों में से पटना प्रमुख है। इतना ही नही पूरे बिहार के संदर्भ में बात करें तो नाट्य परम्परा यहाँ की पुरानी विरासत है। गाँव में लोग हाथ में लालटेन लेकर चार-पाँच मिल पैदल चलकर रात-रात भर नाटक देखा करते थे। तब मनोरंजन के साधनों में ये प्रमुख स्थान रखता था। आज भी वहाँ अपने तरह का रंगमंच हो रहा है। पटना कलम पूरे बिहार की रंग गतिविधियों पर नजर रख रही है। आइए, एक नजर डालते हैं मई महीने में बिहार के विभिन्न जिलों में मंचित हुए नाटकों पर।

राग बसंत

शुरुआत 3 मई को क्रिएटिव आर्ट थियेटर, पटना ने कालिदास रंगालय, पटना में विलायत जाफरी लिखित एस.अता. करीम निर्देशित नाटक 'ये जहर कौन पिये' से हुई। 5 को कलर व्हील, दरभंगा ने मिथिला साहित्य परिषद, दरभंगा में फ्रिटीज कारिंथी लिखित श्याम कुमार सहनी निर्देशित 'रिफण्ड' का मंचन हुआ। 6 को आशीर्वाद रंगमंडल, बेगूसराय ने दिनकर कला भवन, बेगूसराय में फ्रांज काफ्का लिखित अमित रौशन निर्देशित 'मकबरे का रखवाला', कालिदास रंगालय, पटना में मैथिलीशरणगुप्त लिखित अंजुला कुमारी निर्देशित 'यशोधरा', दिव्यांश कला केंद्र, भागलपुर ने सैंडिस कम्पाउन्ड मुक्ताकाश मंच, भागलपुर में श्री कविंद्र मिश्र लिखित मिथलेश कुमार निर्देशित 'उर्वशी' एवं सोज टॉपर ग्रुप, मधुबनी द्वारा आयोजित रंग पावनी में पूर्ण रंग मधुबनी ने वाटसन स्कूल सभागार, मधुबनी में बंशीधर श्रीवास्तव लिखित रमन कुमार निर्देशित 'अशोक का शस्त्र त्याग' एवं कलर व्हील, दरभंगा द्वारा रिफण्ड की मधुबनी में पुनः प्रस्तुति हुई। 10 मई को कलिदास रंगालय, पटना में कला जागरण, पटना ने टैगोर की कहानी 'कंकाल' का मंचन सुमन कुमार के निर्देशन में किया इसका अनुवाद डॉ नरेंद्र नाथ पांडेय एवं नाट्य रूपांतरण अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा ने किया। 13 को आरा रंगमंच, भोजपुर ने रमना मैदान, भोजपुर में अनिल कुमार तिवारी लिखित एवं निर्देशित नाटक 'यमलोक में रंगबाजी' का मंचन किया। 14 को कालिदास रंगालय, पटना में द आर्ट मेकर, पटना ने विभा रानी लिखित कुणाल सिन्हा निर्देशित 'दूसरा आदमी,दूसरी औरत' का मंचन किया। 17 को जन सृष्टि, पटना ने आम्रपाली नगर भवन हाजीपुर में मोहन राकेश लिखित राजेश कुमार निर्देशित 'सिपाही की माँ', 18 को नवांकुर, भोजपुर ने नागरी प्रचारिणी सभागार, आरा,भोजपुर में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना लिखित राजू कुमार रंजन निर्देशित 'बकरी' का मंचन किया। 19 को अरिपन, पटना ने कालिदास रंगालय में अरविंद कुमार लिखित अमलेश आनंद निर्देशित 'फुटानी चौक' एवं रविन्द्र भवन, पटना में जोगंजली, पटना ने टैगोर की कहानी 'सजा' का मंचन सुबन्ति बैनर्जी ने निर्देशन में किया इसका नाट्य रूपांतरण मृत्युंजय प्रसाद ने किया, साथ ही टाउनहॉल, भागलपुर में कृष्णा कलायन कलाकेंद्र, भागलपुर ने कविंद्र मिश्रा लिखित श्वेता सुमन निर्देशित नाटक 'गंगा' का मंचन किया। 20 को आरा रंगमंच, भोजपुर ने रमना मैदान, भोजपुर में अनिल कुमार तिवारी निर्देशित 'बिजली महारानी' का मंचन किया। 24 को कालिदास रंगालय में नाद, पटना द्वारा विवेक कुमार लिखित एवं निर्देशित नाटक 'राग बसंत' का मंचन किया। 25 को कटिहार इप्टा ने नगर भवन, कटिहार में समरेश बासु लिखित प्रवीण कुमार ठाकुर निर्देशित 'खुदा हाफिज', 26 को बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, खगौल में सम्पूर्ण कल्याण विकास समिति, खगौल ने मधुकर सिंह लिखित ज्ञानी प्रसाद निर्देशित नाटक 'कुतुब बाजार' का मंचन किया। 27 को अभिकल्पना कलावृक्षम, पटना ने भारतीय नृत्य कला मन्दिर, पटना में हृदय नारायण झा लिखित सुदीपा घोष निर्देशित 'प्रेम के सात रंग' एवं आरा रंगमंच, भोजपुर ने रमना मैदान, भोजपुर में अनिल कुमार तिवारी निर्देशित नाटक 'बाप रे बाप' का मंचन किया।

प्रेम के सात रंग

राजन कुमार सिंह

जीवन का झरना

आरसी प्रसाद सिंह

यह जीवन क्या है? निर्झर है, मस्ती ही इसका पानी है।
सुख-दुख के दोनों तीरों से चल रहा राह मनमानी है।

कब फूटा गिरि के अंतर से? किस अंचल से उतरा नीचे?
किस घाटी से बह कर आया समतल में अपने को खींचे?

निर्झर में गति है, जीवन है, वह आगे बढ़ता जाता है!
धुन एक सिर्फ है चलने की, अपनी मस्ती में गाता है।

बाधा के रोड़ों से लड़ता, वन के पेड़ों से टकराता,
बढ़ता चट्टानों पर चढ़ता, चलता यौवन से मदमाता।

लहरें उठती हैं, गिरती हैं; नाविक तट पर पछताता है।
तब यौवन बढ़ता है आगे, निर्झर बढ़ता ही जाता है।

निर्झर कहता है, बढ़े चलो! देखो मत पीछे मुड़ कर!
यौवन कहता है, बढ़े चलो! सोचो मत होगा क्या चल कर?

चलना है, केवल चलना है ! जीवन चलता ही रहता है !
रुक जाना है मर जाना ही, निर्झर यह झड़ कर कहता है !

मुद्रक : लेज़र प्रिंटर्स, काजीपुर, पटना - 4, फोन - 9334116085
laserpatna@gmail.com